

अन्हेर-नगरी

(भारतेन्दु हरिश्चन्द्र-विरचित महसनाक कथानकर)

अनुवादक :

प्रोफेसर प्रबोध नागायण सिंह, एम० ए०

मूल्य—६० पैसे

अन्हेर - नगरी

[नारसिंहु हरिश्चन्द्र-विरचित महसन्तक रूपान्तर]

अनुवादक :

प्रोफेसर प्रबोध नारायण सिंह

कलकत्ता विश्वविद्यालय,

कलकत्ता

मूल्य— १० पैसे

प्रकाशक :

मिथिला दर्शन प्राइवेट लिमिटेड

१४ बी, अजनाथ मिन्तार लेन,

कलकत्ता-१



सर्वाधिकार सुरक्षित



प्राप्ति-स्थान :

लोक साहित्य परिषद्

१६२/८०, लोक मार्बेन्स,

कलकत्ता-४१



प्रथम संस्करण १०००

१६६५ ई०



मुद्रक :

मैथिली आर्ट प्रेस

६/१, सेल्लात पोष लेन,

कलकत्ता-१

अन्हैर नमरी चौपट राजा ।
टके सेर बधुआ टके सेर साजा ॥

❀

❀

छेदभग्ननतूनचम्पकवने रक्षा करीरहुमे
हिंसा हंस-मयूर-कोकिलकुले कावेरु लीलारतिः ।
सातह्वेन शरकयः समनुला कर्पूरफार्पासधोः
एषा वन विचारणा गुणिमले देशाय तस्मै नमः ।

साहि देशक गुणी लोकनि चन्दन, आम तथा चम्पाक
वन के काटि कर करील वृक्षक रक्षा करैत छथि; हंस, मोर
तथा कोकिल के मारि कर कोबाक लीला से प्रेम करैत छथि;
हाथी व' कर गदहा किनैत छथि और कर्पूर तथा रुर के एके
समान पुजैत छथि साहि देश के नमस्कार करैत छी !

पुरुष - पात्र

महेशजी
 नारायण दास — बेला
 गोवरधन दास — बेला
 कवाडवाला
 वासीराम
 हाडुबाई
 मुगल
 पाचकवाला
 जातिवाला (माछण)
 बनिवाँ
 सेवक
 राजा
 लंबी
 प्रार्थी
 कन्टू
 कारीगर
 शूजवाला
 भिक्षु
 कसाई
 गंडेरिवा
 कीचवाल
 पहिल सिपाही
 दोसर सिपाही

स्त्री - पात्र

नारंगीवाली
 कुँजइनी
 माछवाली

ॐ

अन्हेर - नगरी

पहिल अंक

॥०००॥

स्थान—बाह्य ग्राम

नेपथ्य में मन्द स्वर में क्यो गाबि रहल अछि :—

अन्हेर नगरी चौपट राजा ।

टके सेर बधुआ, टके सेर साजा ॥

(महंथजी तू चेलाक संग गाबैत आवि रहल छथि ।)

सब—की करबऽ सुन्दर देखिया लऽ कऽ भजन नहि कैलऽ !

जौ तौ भजन नहि कैल देखऽ,

तँ माटिक डेलवा घूँद पड़ैते गलि जैबऽ !

जौ तौ भजन नहि कैल देखऽ,

तँ माटिक बरतनमाँ टोनमा लगेते फुटि जैबऽ !

जौ तौ भजन नहि कैल देखऽ,

तँ तेलियाक घरदा, कोलहुआ पेड़ैते मरि जैबऽ !

जौ तौ भजन नहि कैल देखऽ,

तँ धोबिया क गद्दा, उसना छड़ैते मरि जैबऽ !

मुसल्ला के अन्न नहि देखऽ,

पियसल्ला के पानि नहि देखऽ,

एकवलि कितु नहि धनैलऽ, भजन नहि कैलऽ !

की करबऽ सुन्दर देहिवा लऽ कऽ भजन नहि कैलऽ !

मईब—कथा नारायण दास, ई नगर दूर तैं त बड़ दिग्य
बुझाइ पड़ै ! देख त, कितु भिन्हा-भिन्हा भेटैं त ठाकुर-
जीक भोग क ओरियाहन करी ! की तौ ?

नारायण दास—गुरुजी महाराज, नगर त नारायणक
इच्छा सैं बहने सुन्दर छैक, किंतु किदल कहलकै ते किन्हो
जी सुन्दर भेटैं तखन ने !

मईब—कथा गोबरधन दास, तौ पच्छिम दिस सैं जो
जां नारायण दास पूरव दिस सैं जा रहल अछि । देख,
जी कितु मिदहा-सामझी भेटैं त भी भी शालग्रामजी क बाल-
भोगक प्रवन्ध हो ।

गोबरधन दास—गुरुजी, देखैत ने रहियौक जे हम कतेक
राशि भिन्हा आनि कए डंगरा दैत छी ! एहि ठामक लोक सब
तैं बड़ मालदार बुझाइल ! अपने चिन्ता छोड़ि देख जात !

मईब—कथा, बेसी लोभ नहि करी । देखिये, हे—

(गीत गावैत-गावैत लभक प्रस्थान)

पापक यदि ई लोभ अछि, लोभ मिठावै मान ।

लोभ करी जुनि भूलि कर, एहि मे नरक-निदान ।

दोसर अंक



स्थान—बाजार

कवाववाला—कवाव गरमागरम मसालादार—चौरासी
मसाला, बहत्तर आंचक कवाव—गरमागरम मसालेदार !
जे खाइथ से ठोर चाटथि आ' जे नहि खाइथ से जीह काटथि ।
कवाव लियह, कवाव क डेर—दाम टके सेर ?

धासीराम—चाना जोर गरम !

चाना बनावथि धासीराम । जिनकर भोली मै दोकान ।
चाना चुरमुर-चुरमुर बोलै । बाधू खैया ले मुख खोलै ।
चाना खावै तौकी मैना । बाजै निम्नन बनल चवेना ।
चाना खाथि गफूरन, मुन्ना । जे छथि नमरी भित्तर-धुन्ना ।
चाना चिबबद्धि सब बज्जाली । घरमे खोखी खदखद खाली ।
चाना भकसथि पंडित मुह्ता । जे सब भगइथि सुहमसुह्ता ।
चाना कीनथि हाकिम आला । हरदम चाहथि गड़बड़ भाला ।
चाना जोर गरम ! टके सेर ! टके सेर !

नारंगीवाली—नारंगी ले नारंगी ! चुटबल क नारंगी ।
रामबागक नारंगी, आनन्दबागक नारंगी । भाइ, नेमुआ

सन नारंगी । हमर मुनसा अछि दुरंगी । केकरा चाही
सहन संगी ? नारंगी ले नारंगी । कमला नेमी । मिठका
नेमी । रंगलीला ई समलीला । लीपइ जवरी भरि कण
खोइला, नहि तँ कानय बीआ पाछा । टके सेर, नारंगी
टके सेर !

हलुवाइ—जिलेबी गरमागरम । ले सेब, इमिरबी, लड्डू,
गुलाब जामुन, सुरमा, मुनिर्वा, बरफी, राबड़ी, पेड़ा, कचौड़ी,
दाहिमोट, कचौड़ी, घेवर, गुपचुप । हलुवा ले हलुवा, मोहन-
भोग ! गुपगुप हलुवा, मोहनदार कचौड़ी, मारि चौभक्का !
बी नँ गरक, बीनी मे तरल, चामनी मे चौभक्कल । ले मुंगवा
लड्डू । जे खाव सेहो पचसाई, जे नहि खाव सेहो पचसाई ।
रेपड़ो कड़ाकड़, पापड़ पड़ापड़ । गहन जाति हलुवाइ, जकर
क्षत्तीस कोटि माइ । जेना कलकत्ताक बिलसन मन्दिरक भित-
रिवा तहिना अन्होर जगरीक हमरा लोकनि । सब सामान
खाजा, खाजा ले खाजा, टके सेर खाजा !

कुँडकुनी—ले धनिया, मेथी, पोरे-पाकक, बधुआ-करमी,
मोतिर्वा, कुलफा, खेसारी, चना, खरिसबक साग । ले बैंगन,
लौकी, खोइड़ा, आलू, नेतुर्वा, ओल, रामपरवल, मुरइ । ले
आदि - मिरचाइ, लहसुन - पिवाइज, टिकोला । ले कलसा,
खिरबी, आम, लहाम, नेवी, मटर, खेसारी, ओरहा । जेहन
काजी तेहने पात्री । रैबल राजा, टके सेर खाजा । ले हिन्दु-
महानक मेवा कूट आ' बैर ।

मोमल—बादाम, पिस्ता, अखरौट, अनार, बिहीदाना, मुनक्का, किरमिश, अंजीर, आबजोश, आलूबोखारा, चिलगोजा, सेब, नाशपाती, अंगूरक पेठारी । हमर एहन मुलुक अछि जाहि मे अंगरेजो बहादुरक होश दुखत भ' जाइत छन्हि । हिन्दुस्तानक आदमी लिक्-लिक्, हमर मुलुकक आदमी बमक-बमक ! ले सब मेवा टके सेर ।

पाचकवाला—

चूरन अलमवेद केर भारी । जेकरा कीनधि कृष्ण सुरारी ।
हमर पाचक अछि पचलोना । खेने लगे न जादू टोना ।
चूरन बनल मसालादार । सरिपहुँ आमिल केर बहार ।
हमर चूरन जे कथो खेता । हमरा छोड़ि फतहु नहि जैता ।
हिन्दू - चूरन एकरहि नाम । बिलायत चूरन एकरहि काम ।
चूरन अहिवा सँ अछि आएल । देशक घन-बल सब निघटाएल ।
चूरन अलमवेद केर खट्टा । सब कथो ओढ़थि तगि दुपट्टा ।
चूरन कीनधि नेता बन्दा । सरिपहुँ पचा लेथि सब बन्दा ॥
चूरन अफसर सब जौ खेता । दू गुण रिशवत तुरत पचौता ।
जौ मुसफोल छात्र कथो किनता । लगलहि प्रोफेसर ओ' बनता ।
जौ कथो प्रेमी चूर्ण मँगौता । इच्छित मित्रा तुरत ओ' पौता ।
चूरन पचयथि लाळा लोग । जिनका अकिल अजीरन रोग ।
चूरन साथि एडीटर जात । जिनका पेट पचै नहि जात ।

चूरन माहौल लोकनि खेलनि । सौख्ये हिन्दू हजम क' लेलन्हि !
 चूरन पुलिस दुरोगा आनधि नै कानून एको नहि मानधि ।
 ले चूरन डेरक डेर । टके सेर, टके सेर ।

माछवाली —माछ ले माछ ! टके सेर ! टके सेर पोठी,
 टके सेर मुन्ना ।

पोठी टके के सेर बिकारै !

लास टका के वाला जीवन, गंदीकी सब छलवारै ।

नैन-मदरिचा रूप आल मे, देखितहि जे फँसि आवै ।

बिनु पानी मछरी ई चिरहिवा, मिलै धिना औनायै ।

पोठी टके के सेर बिकारै ।

जाति-बाला (ब्राह्मण) —जाति ले जाति टके सेर जानि ।
 एक टका दे, हम एतबहि अपन जाति बेच दैत छी । टाकाक
 लेल ब्राह्मण सँ धोबि भ' जाय आ' धोबि कें बामन बना दी ।
 टाकाक लेल जेहन कही तेहने व्यवस्था द' दी । टाकाक निमित्त
 झूठ के साथ क' दी; टाकाक लेल ब्राह्मण सँ मुसलमान,
 टाकाक लेल हिन्दू सँ ख्रिस्तान । टाकाक लेल हम धर्म आ'
 प्रतिष्ठा दुनू बेचि दी । टाकाक लेल कुसि गवाही द' दी ।
 टाका हेतु पाप के पुण्य मानी आ टकेक वास्ते नीच के अपन
 पितामह बना ली । वेद, धर्म, कुल मरजाद, शरा, बड़प्पन
 सब टके सेर । छ' जाइत जाउ टके सेर । छुटा देलहुँ अन-
 मोल माल । टके सेर, टके सेर । छ' जाउ ।

बनियाँ - बड़ा दाढ़ि, छकड़ी, नील-पी-पीली, मसाला,
पाउर टके सेर । सब माग टके सेर ।

[बाबाजी हँसते गोवरधनदास अर्धश्रु और बेचबड़ा समक
जवाब मुनि मुनि कर नैवाक आनन्द में चढ़ प्रसन्न होइछ ।]

गोवरधन दास—की हौ बनियाँ भाइ, ओटा की भाय छन्दु ?

बनियाँ—टके सेर ।

गोवरधन दास—आ' पाउर ?

बनियाँ—टके सेर ।

गोवरधन दास—आ' पीली ?

बनियाँ—टके सेर ।

गोवरधन दास—आ' पी ?

बनियाँ—टके सेर ।

गोवरधन दास—सब टके सेर ! मत्वे ?

बनियाँ—हैं महराज, हम कि कुसि बजैत ली ?

गोवरधन दास—[कुँ उड़तीछ छग जा कण] की हे, माग
की दर ?

कुँ उड़ती - बाबाजी, टके सेर ! नेव्या, मुग्ग, बनियाँ,
मिरबाइ, सब माग टके सेर !

गोवरधन दास—सब तिममन टके सेर ! बाह-बाह !
अनि इलम ! अनि इलम ! एतय सब कितु टके सेर ?

[हन्डवाइक लग जा कण] की हौ, ह-इयाइ भाइ, मिगाइ
की दर ?

हलुबाइ—बाबाजी, बुनियाँ, हलुबा, पेड़ा, जिलेपी, गुलाबजामुन, खाजा सब टके सेर ।

गोबरधनदास—बाह ! बाह ! अनि उत्तम ! कियैक, क्या, चूटकी न नहि ल' रहल हूँ ? की सबे सब टके सेर होँक ?

हलुबाइ—हैं बाबाजी, सब किल्लु टके सेर । एहि नगरीक बाजिये गहने होँक । एतय सब किल्लु टके सेर बिकाइत होँक ।

गोबरधन दास—क्या, एहि नगरीक नाम की बिबेक ?

हलुबाइ—अन्हेर नगरी ।

गोबरधन दास—और राजाक नाम ?

हलुबाइ—चौपट राजा !

गोबरधन दास—बाह ! बाह ! अन्हेर नगरी चौपट राजा, टका सेर कधुवा टके सेर खाजा । [इधेर मार्चल मार्चल आनन्द में नाचि नाचि कर मुसड़ी बजा रहल अछि ।]

हलुबाइ—स बाबाजी, किल्लु सेबा देवाक बिचार हो न होख जाउ ।

गोबरधन दास—क्या, भिक्षाइन क' कर इपेट खात पैसा आतने छी । मादे तीन सेर मधुर द' दे । एतयहि मै गुन जा' चेला सब केँ ठोंठियाँ टकार भ' जेतन्हि । आतने सब सुकित भ' जेनाह !

[हलुबाइ मधुर मीठल अछि । बाबाजी मधुर नेने खाइत और "अन्हेर नगरी चौपट राजा" मार्चल जा रहल अछि ।]

तेसर अंक

●●●●

स्थान—जंगल

[एक दिस सँ महंथजी और नारायण दास “की करवड मुन्दर देखिया ल’ कड” इत्यादि गार्बन आबि रहल छथि आ’ दोसर दिस सँ गोवरधन दास “अम्हेर नगरी चौपट राजा” गार्बन प्रवेश क’ रहल छथि ।]

महंथ—बच्चा गोवरधन दास ! बाज, की की भिक्षा आनहें ? गेठरी न भारी बुकाडत छीक !

गोवरधन दास—बाबाजी महाराज ! देरक देर माल आनने छी । माढ़े तीन सेर न मधुरे अछि ।

महंथ—देखियौक बच्चा ! [मधुरक गेठरी अपना आगाँ राखि कए खोलैछ आ’ देखैछ] वाह ! वाह ! बच्चा, एतेक राशि मधुर कतय सँ आनहें ? कोन धर्मात्मा सँ भेंट भेटौक ?

गोवरधन दास—गुरुजी महाराज ! साते टा पैसा भीख मे भेंटल छल । ओही सँ एतेक मधुर कीनि कए आनने छी ।

सहस्र—बधा ! नारायण दाम हमरा करने छै ठे एतय
मय भन्नु टके सेर चिकाइन छक, परन्तु मयन हम ओकर कथाक
निश्चय नहि केने छलियैक । यथा, ई कोन नगरी बिदेस,
एकर राजा के थिकैक जनय टके सेर बधुआ और टके सेर
स्वाजा भेटैछ छैक ?

गोवरधन दाम—अन्हेर नगरी चौपट राजा ।

टके सेर बधुआ, टके सेर स्वाजा ।

सहस्र—तवन बधा ! एहन नगरी मे रहय उचित नहि,
एनर टके सेर बधुआ और टके सेर स्वाजा हो । कहौं
सेरी छैक :—

मेन-मेन मय एक मय, मूर काज समान ।

एहन देश कुदेश मे, करजन बास मुतान ॥

होईछै चौपा एक मय, पड़िन मयन एक ।

बह हमर व्यवहार मे, होइ न जनय बिदेस ॥

मोअरु बनिम सहजि जी, एहन चौपट देश ।

कमी न संकट मे पड़ी, माण्ड होम रोप ॥

से बधा, बह एहि दाम में । एहन अन्हेर नगरी मे हजारो
मन मयूर जी मोकसिये भेटै न ओ कोन काजक ? एतय एकहु
अन रहननाइ उचित नहि ।

गोवरधन दाम—गुरुजी, एहन न संसार भरि मे कोनो
देशहि नहि अछि । टंक मे दुइकोटा पैसा रहनहि [देह होमोर्धन]
अछोदि कर या मचैत नही । हम एहि दाम में आय किछहु

नहि जाणव ! आन-आन जगद् दिन-दिन भरि खेळनिया
काटू नैयो पेडो धरि मोमकिये सँ भग्न । कोनो-कोनो दिन
उपासो क लेल पाध्द होमि पड़इ । से हम त एतय सँ आव
टसकव नहि ।

महथ—देख बधा, पाछी पचतार्य पड़तीक ।

गोबरधन दास—अपनेक कुषा सँ कोनो दुःख व्यापित नहि
होनेक । हम त कहथ जे अपने सेहो एही ठाम रहि गेल जाउक !

महथ—हम त आव एहि नगर मे एकहु क्षण नहि रहव ।
देख, हमर बात मान, नहि त पाछी पचतार्य पड़तीक । हम त
जा रहल छी, परन्तु एतवा करने जा रहल छीकीक जे मकन मे
पँसला उत्तर हमर स्मरण करिहें ।

गोबरधन दास—प्रणाम गुन्यही, हम अपनेक स्मरण
प्रतिदिन करव । हमर पुनः प्रार्थना जे अपने सेहो एतहि
रहल जाव ।

महथजी नारायण दासक संग जाइत छथि । गोबरधन
दास थमाइ कए बसि जाइत आ' नभुर भकोमि रहल अछि ।]

[ययनिका-यात]

चारिम अंक

स्थान—राजमहल

[राजा, मंत्री तथा सेवकगण वधान-धान स्थित हूँ
एक सेवक—[चिपकारि कर] पान लेल जाउ महाराज ।

राजा—[अक-बका बर आसन से उठेन] की बातसे ?
सुवन्मया आगल महाराज ! [बहादुर]

मंत्री—[गलाक हाथ बपदि कर कनेक जोर से] नहि-
नहि ! ई अनुरोध करैदू ने पान लेल जाउ महाराज ।

राजा—बुद्ध, मुष्का, पाती ! अमेरे हमरा करा देखक ।
देखू न अकक नमो गेल मंत्री, एकरा एक न कीहा
हणवाक स ?

मंत्री—मरकार एकर होन दीप होक गलि से ? ने बड़वा
पान गगा कर देखिहैक आ' ने ई बातनिहै ।

राजा—अच्छा, न पड़ेने के दू नै कीहा उगाओल जाय ।

मंत्री—परन्तु सरकार, अपने 'पान लेल जाइ' सुनि कर
स नहि ने दारल छलियैक । अपने के नै सुवन्मयाक नामे से
कर भ' गेल । नै सुपनसे के दृष्ट देख जाइ ।

राजा—[धरधरदौन] केर कैह नाम ? मंत्री, अहाँ कइ कुटि छी । हम जानौ क कहि देबनि जे मंत्री धाम्मदार अछी-ह सेल सौनिमक रघुदत्ता कथाक केर में छथि । स्वाम, स्ववास ! हाह ...।

सौसर स्ववास—[एक मुगली सँ एक निलाल मे दाह द्वारि कए रैन छति] सेल जाइ महाबाह, पीयल जाइ ।

राजा—[सुत चमका-चमका कए पान करइ और ला गै]
[नेपथ्य सँ "दोहाइ सरकार, दोहाइ सरकार" ई शब्द मुनल जाइह ।] के चंचिया रहल अछि ? कहि कए आन न !
[३ भिषाही एक प्रार्थी सँ कहि कए आनैह ।]

प्रार्थी—दोहाइ सरकार दोहाइ ! हमर न्याय हो ।

राजा—कुप रह । मोह न्याय न मनय एहन हेनौक जेहन यमराजौक ओहि ठाम नहि हेनौक गै- जाउ, की भेलौक ?

प्रार्थी—सरकार कल्लू बनियाक देवार निर पकुलैक, से हमर चकरी बेचारी ओकरहि नीचा धकुचा भ सेल । दोहाइ सरकार, न्याय हो ।

राजा—[स्ववास सँ] कहइ बनियाक देवार क गुरन कहि कए आन न ।

मंत्री—सरकार, देवार के नहि आनल जा सकैह ।

राजा—अच्छा, ओकर भाइ, बेटा, दोस्त, सर कुटुम जे हो सकने कहि आन गै ।

माजी —महाराज, देवार कुँह-कुँहक से ही लूँक खोदना भाड़-बैठा कनक से मुँहक ?

राजा —अच्छा, त कल्लू बजिये के पकड़ि कम लई जाये ।
[निवाही सब दीदि का बजिया के पकड़ि आनेह ।] कियेक
री क दुआ ? एकर लइकी, नहि नहि परही कियेक लिये कम
मरि गेलैक ?

माजी —परही नहि मरुआर, मरही ।

राजा —हँ, हँ परही कियेक मरि गेलैक ? खना, तहि त
मरुआरि फाँसी पर चढ़ा के रीक ।

कल्लू —महाराज, तहि से हजार कोना कोना मरि । कारीगर
मान ने देवार बनीले लूक से गिर परल ।

राजा —अच्छा, तहि कल्लू के लीदि तरक, कारीगर के
पकड़ि कम आनेह । कल्लूक बजनाह । लोक सब कारीगर
के पकड़ि कम आनेह बधि ।] कियेक री कारीगर एकर
चढ़ी कोना मरि गेलैक ?

कारीगर —महाराज, हजार कोना कोना तहि, चुनवाला मान
ने फाँस चुन बनीलक से देवार गिर परलैक ।

राजा —अच्छा, तहि कारीगर के बजाएह, तहि-तहि
निकाएह । ओहि चुनवाला के बजाएह । कारीगर निका-
एह जाइल और चुनवाला बजाओल जाइल ।] कियेक री,
खैर-सुपारी-चुनवाला ! एकर कुबरी कोना मरि गेलैक ?

तूनवाळा—महाराज, हमर कोनो अपराध नहि, भिल्ली चून में बेसी क' कर पाणि डकल्लि देलकैक । नानी सँ चून किछु कमजोर भ' गेल हेतैक ?

राजा—अच्छा, तुम्रीआल के भयावह आ' भिल्ली के पकड़ । [तूनवाळा निकालल जसइ और भिल्ली के आनल जाइइ ।] री भिल्ली, तौ एतेक पाणि कियैक देलही जे एकर चकरी मिर पड़लैक और देवार दधि मोलैक ।

भिल्ली—महाराज, एहि दीनक कोनो दोष नहि, कसाइ एतेक ने पैस भिल्ली बचा देलक जे ओहि मे बहुत अधिक पाणि ओडि मोलैक ।

राजा—अच्छा, कसाइ के पकड़ कर आनल आ' एहि भिल्ली के निकालल त । [भिल्ली के निकालि कर कसाइ के आनल जाइइ ।] री कर्मचा, तौ मशक एतेक पैस कियैक लीजै जे देवार गलि मोलैक आ' चकरी दधि मोलैक ?

कसाइ—महाराज, हमर कोनो अपराध नहि, गधेरिया हमरा हाथे चढ़ा भेड़ा वेप देलक, सँ ओकर मशकी पैस भ' मोलैक ।

राजा—अच्छा कसाइ क' भयावह आ' गधेरिया के आनल । [कसाइ के निकालि गधेरिया के आनल जाइइ ।] री लपोरख, लन भेड़ा कियैक बेचलै जे चकरी मिर मोलैक ?

गधेरिया—महाराज, ओमहर सँ कीतवाल माहेंक

सवारी आवि रहल छैक । से पैह देखावा मे हमरा छोट
बड़ भेड़ाक ध्यान नहि रहल । हमर कोनो दोष नहि सरकार ।

राजा—अच्छा, पहरा हँटावह आ' कोतवाल के मँगवाह
न । (महेरिया के निकालि कम कोतवाल के आनल जाइत)
रो कोतवाल, तौ एहन शान वान से सवारी कियेक निकाल्ले
जे बहुत भेड़ा बिछा गेलैक आ' बकरीक गिरहा से कलह
बनियो बिचा कर मरि गेल ?

कोतवाल - महाराज, महाराज ! हमर कोनो अपराध
नहि, हम न नगरक प्रबन्ध क लेल जा रहल छल ।

मंत्री (स्वगत) लेल, ई न भेल अ-हेर ! एहन नहि
हो के गरी धामपर ई चुनियह समस्त नगर के फौजी पर लहका
दैक वा भकसी ज्येक दैक । (कोतवाल से) से नहि, तौ
एकेक धूम-धड़का से सवारी कियेक निकाल्ले ?

राजा—हँ-हँ, से नहि, तौ एकेक धूम धड़का से सवारी
कियेक निकाल्ले जे ओकर बकरी दूहि गेलैक ।

कोतवाल—महाराज, महाराज !

राजा—बोप ! किछु नहि सुनल जेनीक । पहरा पहरा
आ' दोगि दे फौजी पर । दरबार परस्थान ।

(एक दिन से अगला सब कोतवाल के बान्हि का ल'
जाइत आ दोसर दिन से मंत्री के बसने राजा जा रहल
छथि ।)

(यथनिका पाठ)

पाँचम अंक

स्थान — अरण्य

(गोविन्दधन शाय - गार्वन गार्वन आचि रहल अछि ।)

अन्हेर नगरी चौपट राजा । टके सेर बभुआ टके सेर स्वाजा ॥
नच भट्टि आ' लम्पट जेहने । साधु मन आ' पण्डित तेहने ॥
कुल मगजादा भेल निपत्ता । मौगी मुन्ता सन अलपत्ता ॥
बेहवा जोल एक भेलैये । बकरी जेकाँ गाय विक्रिये ॥
साधु-मन सब नुरिचक बनला । हली दुष्ट राजा बनि चलला ॥
साँच कही नै पनही लगै । भूट बनी नै भाग्यहि जागै ॥
प्रगट सभ्य अन्तर छलबारी । सभा-मध्य गूजिन से भारी ॥
भीतर हाँइ मलिन वा फारी । बाहर बगुला चानन - धारी ॥
भीतर स्याहा बाहर सादा । राज करधि अमला आ' प्यादा ॥
अंभाधुन्य मचल अछि भारी । रक्षक सूतल ठाँकि केवाड़ी ॥
गो-द्विज-श्रुति आदर के जाने ? बूझू राज बिधर्मी आने ।
अन्हेर नगरी चौपट राजा । टके सेर बभुआ टके सेर स्वाजा ॥

(खूब हँसि हँसि कए मधुर स्वा रहल अछि ।) गुरुजी
हमरा अनेरे मना केने छुछाह जे एतय नहि रही । मानल कि

देता वह मरगाव अर्द्ध, किन्तु मालि में की ? हम कोनो राज-
काज में थोड़-छोड़ के दर देन ? रोज मग्न भर्त्सना की आ-
माँ जहाँ अकरनि गेट छी । हमरा चिन्ते कोन ? यम
भीछा ! हर-हर महादेव !

(मग्न स्व रहल अछि । दलनरि चारि मोट सिपही
बाह काज में आवि गए चलान के लैत छनि ।)

परिल सिपाही — चल रे, चल । यह मग्न हूँसि हूँसि
गए गेटेवा भ' गेल छे ! आठ गुरु म' गेलौक ।

दीनर सिपाही बाबाजी बलिखीन ने । समो नारायण
कह, समो नारायण !

गोपबन्धनराम — (व्याकुलता-पूर्ण) हो नीरो ! ई विपनि
कतव्य में आवि गेल ? हो भाई, हम दीनर हो भोगहीने दिसत
जे हमरा पकड़ि रहल छह ?

परिल बाबा — अरे ! मगहीने दिवस दि पनीने दिवस
कहि में कोन काज ? जाव बड़, पौंसि पर बागहीन मे,

भावगुलनराम — पौंसि ? अरे राव रे जाव, पौंसि ?
हम केकर सजाना खुदने छी जे पौंसि बड़-दर अछि ? हम
केकर हत्या केने छी जे ई . . .

दीनर सिपाही — अपने बहुत मोट दिवस । ते पौंसि
भ' रहल अछि ।

गोपबन्धनराम — मोट हेवाक पहरने पौंसि ? ई कोन
ठामक न्याय केनेक ? अरे, बाध-हकीर में गेटा चुनि करी
सिपाही की !

परिल सिपाही—जखन शूली भ' जाएत तखन दुम्भरीक जे उहा छर्केक कि की ? सोक सोक चलव कि चिसिया कए ल' चलहु ?

गोबरधनराम—अरे बाबू रे बाबू ! जीआ, कियेक बेकपूर स प्रान -र' रहल छुह ? भगवानक ओहि ठाम की जवाब देबहक ?

परिल सिपाही—भगवान क जवाब राजा देखिह ते । हमरा तप केँ चीन मनलव ? हमरा छोकनि केँ न आजा-पालन करवाक अछि ।

गोबरधनराम—नैयो, राज की धियेक चीआ ? तिनक एहि सारू क अपने कोसी देल जेनक ?

परिल सिपाही—विषय ई छैक जे कार्लि कोतवाल क फौसीक हुकुम भेल छलक । फौसीक सेह ओकरा डाढ़ करि ओल गेलक त फौसीक फरार ओकरा घरदनि में पंच भ' गेलक, धियेक त कोतवाल माहेब हुजूर छलाह । हमरा छोकनि महाराज केँ सूचित केलियेक त हुकुम भेलक जे कोनो मोट आवामी केँ एकड़ि कए फौसी पर चढ़ा देल जाव, कियेक त एकरीक तयाक अपराज मे कोनो मे कोनो आवामी केँ हनिहू न भेलाइ अनिवार्य छैक । से नहि भेने तयाव नहि भ' सकनेक । अपने केँ एही सेल ल' जा रहल छी जे कोतवाल क चढ़ा मे फौसी पर मुला दी ।

गोचरधन दास—त को एहि नगर भरि में आन कोनो मोट
लोक नहि भेंटल जे एहि अनाथ फकीर के फाँसी दे रहल छी ?

पहिल सिपाही—एहि में दू बात छैक—एक त ई जे एहि
नगर भरि में राजाक न्यायक हर मं कयो बिकसैते नहि छैक
आ' दोसर ई जे आन केकरो पकड़मे कदागिन् बात बना-बना
कए ओ हमरहि समक ने धर्म क' दिअ । नकर अनिरुद्ध
एहि राज में न माथुन सन्तक दुर्गति ने छैक ! सब दृष्टिमें अहाँ
फाँसीक लेल बड़ उपयुक्त छी ।

गोचरधन दास—दाहाइ परमेश्वर क' दयालु और-
दानी ! अनेरे एहि दीनक प्राण जा रहल अछि । हाय !
एतय न बड़ अन्देर छैक । हम गुरुजी महाराजक बात नहि
मान-छू नकरे फल आव भेटि रहल अछि । हाय रे दैव !
गुरुजी, ओ गुरुजी ! कतब छी ओ गुरुजी ! प्राण बचाउ
ओ गुरुजी ! हाय रे हाय ! आइ हमर प्राण भेल । एहि
निरपराध के बधाइ ओ गुरुजी ! गुरुजी, गुरुजी !

। गोचरधन दास चिढ़ैछ आ' सिपाही सब ओकरा
धकिया-धकिया कए ल' जाइछ ।]

छठम अंक

स्थान—रमशान

[गोवरधन दास के पकड़ने चारि भिषाहीक प्रवेश]

गोवरधन दास—हाय बाप रे ! एहि निरपराध के फाँसी !
जे खेतहु सेहो निकलि गेल । अरे भाइ, किछुओ न धरमक
विचार करैत जा । अरे, एहि दीन के फाँसी दे' कए की
भेटलहु ? हो, हमरा छोड़ि ने दे ! हाय री ईश ! [कार्तल
आ छोड़ैवाक यत्न करैत ।]

पहिल सिपाही—ईश ! चूटाइ नहि जन ! बूब रह ने ।
वरंच राम-नाम ले । राजाक हुकुम कयनहु टलि सकैत अछि ?
ई अन्तिम बेर छियाँक । हल्ला बन्द के कए रामक नाम ले ।

गोवरधन दास—हाय ! हाय !! हम गृहजीक धान
काटवाक फल भोगि रहल छी ! ओ कहने छलाह जे एहन नगर
मे रहब उचित नहि । किन्तु हम पैतृ, हम मूर्ख ! हम हुनक बात
नहि सुनलियन्हि । अरे, एहि नगरेक नाम जस्यन अन्हेर नगरी

झियैक आ' राजाक नाम चौपहराज झियैक तखन बचवाक कोन आस ? की एहि नगरी मे एहन कोनो धर्मिया अछिमे ने जे एहि असहाय क रक्षा करै ? गुरुजी, कतब छी औ गुरुजी ! बचाव, बचाव ! गुरुजी, गुरुजी !

[गोबरधन दास भोकारि पाड़ि-पाड़ि कए कानि रहल अछि । सिपाही सब ओकरा चिबैत-तीरैत आ' धकियाबैत-मुकियाबैत ल' जा रहल अछि ।]

[तखनहि गुरुजी और नारायण दासक प्रवेश ।]

गुरुजी—अरे, क्या गोबरधन दास ! तोहर एहन दुर्दशा !

गोबरधन दास—[हाथ जोड़िकए खेजनी करैत] गुरुजी ! देवाराज तर मे बकरी दूबि गेलैक । तँ हमरा काँसी देल जा रहल अछि । आब अही बचा सकैत छी ।

गुरुजी—हो क्या, हम त पहिनहि कहने छलियौक जे एहन मगर मे रहय उचित नहि । तँ हमर क्या कें बाछो ने केले !

गोबरधन दास—तकरे कल पावि रहल छी । ज्ञानी, गुणी आ' गुरुक कथा नहि सुनने की होइत छैक से हम आय बुकि रहल छी । किन्तु अपने हमरा नहि देखथ त हमर उद्धार नहि भ' सकैह । हम अपनहिक कारण मे छी । अपनेक अतिरिक्त हमर और कबो नहि । [पैर पर खसैह आ' भोकारि पाड़ि कए कानैह ।]

गुरुजी—कोनो चिन्ता नहि । भगवान माहीक ! [भौं चढ़ा कए सिपाही सब सँ] सुनह, हम अपन चेष्टा कें अन्तिम

उपदेश देना तों सब कनेक कराके हँडि कर डाढ़ भ' जाइत जा ।
हे, हमर बात सुनने नीक नहि हेतह !

सिपाही सब—नहि महाराज ! हमरा लोकनि हँडि जाइत
छी । अपने अवश्य उपदेश देल जात ।

[सिपाही सब हँडि कर डाढ़ होइत छथि । गुरुजी बेठाक
कान मे किछु कहि रहल छथि ।]

गोबरधन दास—[प्रगट] तखन त गुरुजी, हम एखनहि
फाँसी पर चढ़ब ।

गुरुजी—नहि बबा, हमही चढ़ब फाँसी पर ।

गोबरधन दास—नहि गुरुजी, हम फाँसी पर चढ़ब ।

गुरुजी—नहि बबा, हम । कतेक सुमेलिबौक तैयो नहि
मानैत छै ? हम बूढ़ भेलहुँ, हमरा जाय दे ।

गोबरधन दास—स्वर्ग जैबा मे बूढ़ की आ' जवान की ?
अपने त सिद्ध पुरुष छी; अपने कें गति-अमति सँ की ? हम
ही फाँसी पर चढ़ब ।

गुरुजी—नहि री बबा, हम चढ़ब ।

गोबरधन दास—नहि, हम चढ़ब ।

[एहि प्रकारे हुनू व्यक्ति दुगुजलि क' रहल छथि—सिपाही
सब को आरचब' भ' रहल छैक ।]

पहिल सिपाही—ई की भ' रहल छैक, से बुझबा मे नहि
जायि रहल अछि !

दोसर सिपाही—हमरो नहि बुझाइत जे ई की गढ़ब' भ'
रहल छैक ।

[राजा, मंत्री और कोतवालयक प्रवेश]

राजा—हैं की सोलमाल में रहल अछि ?

बहिल सिपाही—महाराज, बेला करैत अछि जे हम काँसी पर चढ़ब और गुरु करैत छथि जे हम चढ़ब । किछु बुझवा मे नहि आवि रहल अछि जे बात की क्षीरक !

राजा—[गुस्सी सँ] बाबाजी, बाबू ह । अपने कियैक काँसीक कामना क' रहल छी ?

गुरु—एखन एहन मुहुर्त बीति रहल छैक कि जे मरत से सोझे बैकुंठे जाएत ।

मंत्री—तुम्हें त हमही काँसी पर चढ़ब ।

राजपरायन दास—हम, हम । हमरा हुकुम भेटल अछि काँसी क ।

कोतवाड—हम झूलब काँसी पर । हमरे कारणें त देशर निरालैक ।

राजा—चुप रहैत जात सब लोक । राजा क अछति केकर मजाल जे ओ बैकुंठे जाएत ! हम काँसी पर चढ़ब ! जल्दी, जल्दी ! छा फन्दा ।

[राजा के सिपाही सब तखता पर टाढ़ करैत छथि]

गुरु—असब न धर्म न बुद्धि नहि, नीति न सुजन-समाज ।
से पहिना अपनहि नसे, जेहन चौपट राज ॥

पटाक्षेप

मिचिंला दर्शन प्राइवेट लिमिटेडक प्रकाशन

प्रवक्तिका	(गल्प संग्रह)	०—२५
रहस्य गल्प	(")	१—२५
चौर	(नाटक)	१—००
सलोमा	(पकाकी)	०—७५
अन्धेर आदरी	(महामन)	०—५०

नैमिकानन प्रकाशन क

कनास-कुण्डला	(कल्पनास)	२—५०
प्रमितिधि	(गल्प संग्रह)	२—००

मैचिंली आर्ट प्रेसक

देहिआवक मोन : शीतल झाहरि (गल्प संग्रह)

मोमली गौरी मिश्र, एम० ए०

१—५०